महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

साहित्य सागर

(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

128/23 'R' रवींद्र नगर, यशोदा नगर

कानपुर– 208 011

43.	हिंदी उपन्यास मे दलित दर्शन	डॉ. वडचकर एस.ए.	250
44.	प्रभाकर माचवे का हिन्दी सहित्य में योगदान	डॉ. शिवशेट्टे शंकर	253
45.	हिन्दी अनुवाद और वेदकुमार वेदालंकार	डॉ. विनोदकुमार वेदार्य	257
46.	व्यंग्यकार डॉ. शंकर पुणताम्बेकर	डॉ. बेवले असाराम	262
47.	दक्षिण के प्रवेश द्वार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	डॉ. मनशेट्टी लक्ष्मी	266
48.	डॉ. जर्रा की कविताओं में व्यंग्य	डॉ. शिंदे किरण	272
49.	परिस्थिति से जूझता कवि डॉ. 'जर्रा काजी	डॉ. सय्यद शौकतअली	277
50.	महाराष्ट्र की हिन्दी पत्रिकाएँ	डॉ. मिरगणे अनुराधा	282
51.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास में योगदान	डॉ. जमीर शेख	286
52.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास मे योगदान'	डॉ. भालेराव विश्वनाथ	291
53.	हिन्दी फिल्मों का हिन्दी के विकास में योगदान	डॉ. प्रमोद पाटील	295
54.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास में योगदान	डॉ. रज्जाक शेख	299
55.	हिन्दी फिल्मों का हिन्दी के विकास में योगदान	डॉ. चव्हाण विश्वास	303
56.	प्रयोजनमूलक हिंदी के विकास में डॉ. देशमुख का योगदान	डॉ. बालाजी भुरे	307
57.	प्रयोजनमूलक हिन्दी में महाराष्ट्र के विद्वांनो का योगदान	डॉ. कोटुळे बायजा	316
	संपर्क सूत्र		326

से भी उन्होंने हिंदी सहित्य को योगदान दिया है भारत
काफी यात्राएँ की हैं और वहाँ व्याख्यान दिये है देश
च्चीस देशों की यात्राएँ की उन देशों में भी उन्होंने हिन्दी
देते रहे है इस तरह हिन्दी सहित्य को अपना अमूल्य

हिन्दी उपन्यास – माधव साखरे
निधी रचनाएँ – डॉ. कमल किशोर
दी उपन्यास – कृष्णा रैणा

◆

45

हिन्दी अनुवाद और वेदकुमार वेदालंकार

डॉ. विनोदकुमार वेदार्य

भारतवर्ष एक महान राष्ट्र है, जिसमें संविधान की अष्टम अनुसूचि में दर्ज 24 भाषाओं में रचनात्मक साहित्य का प्रणयन अव्याहत गति से हो रहा है। भारतीय साहित्य के समुचित अध्ययन के लिए किसी भी अध्येता को बहुभाषाविद् होना अत्यन्त आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। यदि कोई जिज्ञासु व्यक्ति सचमुच भारतीय साहित्य का अध्ययन करना चाहता है तो उसे कम से कम अन्य भाषा में विरचित साहित्य को अनुवाद के माध्यम से तो पढ़ना ही पड़ेगा। महाराष्ट्र की देवभूमि ने ऐसे–ऐसे नररत्नों को उत्पन्न किया है, जिन्होंने भारतीय साहित्य के अनुवाद में अत्यन्त महत्वपूर्ण रीति से योगदान किया है। इन महान विभूतियों में आदरणीय प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार का नाम अनूदित हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

परिचय – आदरणीय वेदकुमार जी का जन्म 11 अप्रैल 1932 को लातूर में हुआ। आपके पिता का शुभनाम रघुत्तमदास डुमणे था। जो एक सुयोग्य डॉक्टर के साथ–साथ कट्टर आर्य समाजी और निजामशाही के प्रबल विरोधक भी थे। रघुत्तमदास जी ने वेदकुमारजी को बचपन में ही वेदादि शास्त्रों के अध्ययन के लिए अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार में रखा। वेदकुमार जी ने अपनी आयु के 22 वें वर्ष ही 1954 में गुरुकुल कांगड़ी से 'वेदालंकार' उपाधि का अर्जन कर लिया। 1956 में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी भाषा तथा साहित्य में 'एम0 ए0' तो 1958 में उस्मानिया विश्वविद्यालय से संस्कृत भाषा तथा साहित्य में 'एम0 ए0' अर्थात् स्नातकोत्तर उपाधियों का अर्जन किया।

अध्यापकीय एवं प्रशासकीय सेवा – सन् 1964 से 1992 तक लगातार 36 वर्षों तक अनेक महाविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षा के लिए हिन्दी भाषा तथा साहित्य का अध्यापन करते रहे। 1964 से 1984 तक की अवधि में आप स्वामी विवेकानन्द शिक्षण संस्था के उस्मानाबाद, तुळजापुर, तासगाव आदि के महाविद्यालयों के लगातार 15 वर्ष प्राचार्य भी रहे। 1967–1968 में आप डॉ0 बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय के कला संकाय के अधिष्ठाता

भी रहे। 1992 में आपने सेवा से अवकाश प्राप्त किया है।

अनुवाद कार्य – अध्यापकीय एवं प्रशासकीय उत्तरदायित्व को निभाते हुए आपने हिन्दी साहित्य विशेषकर अनूवादित साहित्य में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया वह अत्यन्त सराहनीय रहा है। संस्कृत, मराठी और अंग्रेजी की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद करना आपका प्रिय कर्तव्य–कर्म रहा है। रचनात्मक एवं वैचारिक दोनों प्रकार की रचनाओं का अनुवाद आपने किया हुआ है। मराठी भाषा में रचे गये युगान्तकारी उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद आपकी विशिष्ट देन है। छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन पर आधारित रणजीत देसाई लिखित उपन्यास 'श्रीमान योगी' का अनुवाद इसी नाम से प्रकाशित हुआ है। धर्मवीर संभाजी महाराज के जीवन पर आधारित शिवाजी सावंत लिखित उपन्यास 'छावा' का इसी नाम से प्रकाशन हुआ है। साथ ही प्रसिद्ध समाजसेविका पंडिता रमाबाई के जीवन पर आधारित ज्योत्स्ना देवधर लिखित उपन्यास 'रमाबाई' का इसी नाम से अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। महाराष्ट्र की उपर्युक्त तीन महान विभूतियों के जीवन को हिन्दी भाषी लोगों तक पहुँचने के साथ–साथ मराठी ग्रामीण साहित्य की महत्वपूर्ण औपन्यासिक रचना रा0 रं0 बोराडे लिखित 'पाचोला' का हिन्दी अनुवाद 'तिनका' इस नाम से प्रकाशित हुआ है।

महाराष्ट्र के सन्तों की वाणी को हिन्दी में अनूवादित करने का श्रेय भी प्राचार्य वेदकुमार जी को ही जाता है। सन्त शिरोमणी जगद्गुरु तुकाराम की 'संपूर्ण अभंगगाथा' अर्थात् 4607 अभंगों का हिन्दी गद्य एवं पद्य, दोनों में आपने अनुवाद किया है। सन्त तुकाराम के ही चुने हुए 500 अभंगों का पद्यानुवाद 'तुकाराम पदावली' नाम से प्रकाशित हुआ है। 'मराठी सन्त काव्य' शीर्षक से सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त तुकाराम, सन्त गोरा कुम्हार, सन्त नरहरि सुनार, सन्त सावता माली, सन्त चोखामेला, सन्त सोयराबाई, सन्त कान्होपात्रा आदि के चुने हुए अभंगों का अनुवाद भी प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक डॉ0 बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय के बी0 ए0 तृतीय वर्ष के पाँचवें प्रश्नपत्र 'प्रादेशिक भाषा साहित्य : मराठी' के पाठ्यक्रम में लगातार दूसरी बार समाविष्ट की गई है। यह हमारे लिए अत्यन्त गर्व की बात है। आजकल आप सन्त ज्ञानेश्वर के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अमृतानुभव' का हिन्दी में अनुवाद करने के प्रयास करने में संलग्न हैं। सुप्रसिद्ध शिकारी जिम कॉर्बेट की रेखाचित्र परक रचना 'माय इण्डिया' का 'मेरा भारत' नाम से अनुवाद किया है। यह रचना भी प्रकाशित हो चुकी है।

वैचारिक साहित्य के अनुवाद में भी आपने बहुत बड़ा योगदान किया है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध समाज सुधारक महात्मा ज्योतिराव फुले के समग्र गद्य साहित्य का हिन्दी अनुवाद आपने किया है, जो महाराष्ट्र सरकार द्वारा 4 खण्डों

में प्रकाशित हो चुका है। महात्मा फुले के पद्य साहित्य का पद्यानुवाद प्रकाशनाधीन है। वैचारिक साहित्य में ही राजर्षि शाहू के 24 मराठी तथा 2 अंग्रजी व्याख्यानों का अनुवाद भी आपने हिन्दी में प्रस्तुत किया है, जो 'क्रान्ति के अग्रदूत–राजर्षि शाहू महाराज' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

प्राचार्य वेदकुमार जी वेदालंकार ने जिस प्रकार मराठी और अंग्रेजी भाषा की महत्वपूर्ण रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया है, उसी प्रकार संस्कृत, अंग्रेजी और हिन्दी की कुछ रचनाओं का मराठी अनुवाद भी किया है। 'संस्कृत सुभाषित सागर' में आपने संस्कृत के नीतिवाचक श्लोकों का मराठी अनुवाद किया है। संस्कृत के विख्यात कवि भर्तृहरि के 'नीतिशतक' और 'वैराग्य शतक' का भराठी अनुवाद भी किया है। विख्यात शिकारी जिम कार्बेट की रेखाचित्रपरक रचना 'माय इण्डिया' का मराठी में 'माझा भारत' नाम से अनुवाद किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'हिन्दी वेदभाष्य' का मराठी अनुवाद भी आजकल आपकी लेखनी से चल रहा है। यजुर्वेद के हिन्दी भाष्य का संपूर्ण मराठी अनुवाद हो चुका है। सामवेद के हिन्दी भाष्य के पूर्वार्चिक भाग का मराठी अनुवाद पूर्ण हो चुका है। सामवेद के ही उत्तरार्चिक तथा ऋग्वेद एवं अथर्ववेद के हिन्दी भाष्य का मराठी अनुवाद कार्य शीघ्र ही पूर्ण होने के असार हैं।

अनूदित रचनाओं के साथ–साथ प्राचार्य वेदकुमार जी वेदालंकार की कुछ मौलिक रचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। आपने हिन्दी में अपना एक कविता संकलन 'कही अनकही' शीर्षक से प्रकाशित किया है। मराठी भाषा में भी आपने मौलिक लेखन किया है। उस्मानाबाद तहसील के तेर ग्राम में उत्पन्न सन्त परीक्षक गोरोबा कुम्हार के जीवन एवं कविता पर आपकी दो पुस्तकें प्रकाशित हुयी हैं। प्रथम 'म्हणे गोरा कुंभार' और द्वितीय 'संत गोरा कुंभार–जीवन व काव्य'। कुल मिलाकर 1981 से आपकी 25 रचनाएँ ग्रंथाकार में प्रकाशित हुई हैं। विविध समाचार पत्रों और मासिकों में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आकाशवाणी के विविध केन्द्रों से भी आपके व्याख्यानों का सीधा प्रसारण, प्रसारण एवं पुनः प्रसारण हो चुका है। सभा–सम्मेलनों तथा पाठशालाओं और महाविद्यालयों में आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं शैक्षिक विषयों पर व्याख्यान होते रहे हैं। इस प्रकार प्राचार्य वेदकुमार जी वेदालंकार की साहित्य और समाज की सेवा है, जारी है और जारी रहेगी।

पुरस्कार तथा सम्मान – प्राचार्य वेदकुमार जी वेदालंकार की साहित्य सेवा के लिए उन्हें कतिपय पुरस्कार और सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। इनमें से केवल तीन का उल्लेख हम करना चाहते हैं। प्रथम महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा अहिन्दी भाषी साहित्यिक का 'गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार'

2002 में प्रदान किया गया। गुरुकुल प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा 'विशेष साहित्य पुरस्कार' 2003 में प्रदान किया गया। साथ ही महात्मा फुले के समग्र साहित्य का अनुवाद करने पर महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री मा0 विलासराव देशमुख के करकमलों से आपको सम्मानित भी किया गया है।

विशेषताएँ – प्राचार्य वेदकुमार जी वेदालंकार ने अपने समकालीन रचनाकारों में अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। सर्वश्री डॉ0 देवीसिंह चौहान, डॉ0 भगतसिंह राजुरकर, डॉ0 चन्द्रभानु सोनवणे (वेदालंकार), डॉ0 सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ0 इरेश स्वामी, डॉ0 महेन्द्र ठाकुरदास, प्रा0 रंगनाथ तिवारी, प्राचार्य गोविन्दराव मैन्दरकर, आदि मराठवाडा क्षेत्र के समकालीन साहित्यिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक रचनाकारों में प्राचार्य वेदकुमारजी वेदालंकार का विशिष्ट स्थान है। अपने अजातशत्रु एवं सौम्य स्वभाव के कारण वे संपूर्ण जनसामान्य में विशेषकर छात्रों में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। प्राचार्य वेदकुमारजी वेदालंकार की रचनाओं की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं–

1. **समाज सुधार की भावना** – आपके बचपन में ही आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव आप पर रहा है। अतः समाज सुधार की भावना आपकी रचनाओं की विशेषता है। वेदानुमोदित सत्य सनातन आर्य वैदिक धर्म में कालचक्र की गति से पाखण्ड का जो प्राबल्य निर्माण हो चुका था, उसका विरोध महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था। उन्हीं के आध्यात्मिक अनुयायी होने के नाते वेदकुमार जी की रचनाओं में पाखण्ड के खण्डन और ऋत के मण्डन की प्रधानता दिखाई देती है। सन्त तुकाराम एवं अन्य सन्तों के काव्य के अनुवाद के साथ–साथ महात्मा फुले और राजर्षि शाहू महाराज के अनुवादों में यह विशेषता अधिक पाई जाती है।
2. **राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति आदर भावना** – छत्रपति शिवाजी महाराज और धर्मवीर संभाजी महाराज के जीवन पर आधारित उपन्यासों के अनुवादों में अनुवादक की भारतीय राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति आदर भावना प्रकट होती है।
3. **तर्क प्रधानता** – सन्तों के जीवन में घटित चमत्कारों को अनुवादक ने यथावत स्वीकार नहीं किया। अपितु चोखामेला के नामकरण और गोरा कुम्हार के कटे हाथों का उल्लेख करते हुए आपने आख्यायिका को पाठकों के सामने रखते हुए स्वयं पाठक ही तर्काधिष्ठित निष्कर्ष निकाले यह अपेक्षा व्यक्त की है।
4. **निर्गुण भक्ति की खोज** – भले ही अनुवादक ने सगुण भक्तों की

कविता का
सन्त के का
रूप का वर्ण
निराकार रू
5. **बहुभाषावि**
अंग्रेजी और
है। अतः को
अन्तर नहीं
सरकार की
करने में हि
अनुवाद कर
6. **गद्यानुवाद**
गद्यानुवाद
ओवियों का
यह पद्यानुवा
ही जान पड़
7. **संगीतात्मक**
कारण आपक
करते समय
8. **सर्वसमावेश**
अन्यतम विशे
सरकारी काय
प्रत्येक रचना
हैं।

निष्कर्ष के रूप
जाता है कि, जिन लोग
पर बाल साहित्य या अ
जी ने इस धारणा को
रचनाकार की श्रेणी क

गुरुकुल प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा 'विशेष साहित्य
गया। साथ ही महात्मा फुले के समग्र साहित्य
सरकार के मुख्यमंत्री मा0 विलासराव देशमुख के
भी किया गया है।

दकुमार जी वेदालंकार ने अपने समकालीन
न प्राप्त किया है। सर्वश्री डॉ0 देवीसिंह चौहान,
न्द्रभानु सोनवणे (वेदालंकार), डॉ0 सूर्यनारायण
महेन्द्र ठाकुरदास, प्रा0 रंगनाथ तिवारी, प्राचार्य
वाडा क्षेत्र के समकालीन साहित्यिक, दार्शनिक
चार्य वेदकुमारजी वेदालंकार का विशिष्ट स्थान
स्वभाव के कारण वे संपूर्ण जनसामान्य में
प्रिय हैं। प्राचार्य वेदकुमारजी वेदालंकार की
कार से हैं–

वना – आपके बचपन में ही आर्य समाज की
ाप पर रहा है। अतः समाज सुधार की भावना
विशेषता है। वेदानुमोदित सत्य सनातन आर्य
की गति से पाखण्ड का जो प्राबल्य निर्माण हो
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था। उन्हीं
ी होने के नाते वेदकुमार जी की रचनाओं में
ऋत के मण्डन की प्रधानता दिखाई देती है।
सन्तों के काव्य के अनुवाद के साथ–साथ
र्षि शाहू महाराज के अनुवादों में यह विशेषता

प्रति आदर भावना – छत्रपति शिवाजी
ाजी महाराज के जीवन पर आधारित उपन्यासों
की भारतीय राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति आदर

के जीवन में घटित चमत्कारों को अनुवादक ने
या। अपितु चोखामेला के नामकरण और गोरा
उल्लेख करते हुए आपने आख्यायिका को
ए स्वयं पाठक ही तर्काधिष्ठित निष्कर्ष निकाले
।

ज – भले ही अनुवादक ने सगुण भक्तों की

कविता का अनुवाद किया हो परन्तु आपका मन्तव्य है कि, तुकाराम जैसे सन्त के काव्य में केवल 300 अभंग ऐसे हैं, जिनमें विठ्ठल के सगुण रूप का वर्णन किया गया है। उर्वरित सभी अभंगों में परमात्मा के निर्गुण निराकार रूप का ही वर्णन किया गया है।

5. **बहुभाषाविदता** – प्राचार्य वेदकुमारजी वेदालंकार का संस्कृत, मराठी, अंग्रेजी और हिन्दी इन चारों भाषाओं पर समान रूप से अधिकार रहा है। अतः कोई भी स्रोत भाषा हो या कोई भी लक्ष्य भाषा हो इन्हें कोई अन्तर नहीं पड़ता। 'पाचोळा' का हिन्दी अनुवाद करने की महाराष्ट्र सरकार की योजना में जब कोई अनुवादक इस आह्वान को स्वीकार करने में हिचकिचा रहा था, तब प्रेमचन्दनुमा ग्राम्य भाषा में इसका अनुवाद कर वेद जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय ही दिया है।

6. **गद्यानुवाद एवं पद्यानुवाद में प्रवृत्ति** – अन्य अनुवादक केवल गद्यानुवाद करते हैं, किन्तु वेद जी ने मराठी सन्तों के अभंगों और ओवियों का गद्यानुवाद करने के साथ–साथ पद्यानुवाद भी किया है। यह पद्यानुवाद इतना श्रेष्ठ बना है कि, कभी–कभी अनुदित पद्य मौलिक ही जान पड़ता हैं।

7. **संगीतात्मकता अथवा लयबद्धता** – संगीत के विशेष ज्ञाता होने के कारण आपके अनुवाद में एक विशिष्ट लय मिलती है, जो पद्यानुवाद करते समय अत्यन्त लाभदायी सिद्ध हुई है।

8. **सर्वसमावेशकता एवं समन्वय** – समन्वय आपकी रचनाओं की एक अन्यतम विशेषता है। आपने स्वान्तः सुखाय अनुवाद भी किया है और सरकारी कार्य के रूप में राजकार्य भी किया है। इन दोनों के अलावा प्रत्येक रचना में आध्यात्मिक एवं सामाजिक समन्वय के बीज प्राप्त होते हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम यह स्पष्ट करना चाहते है कि, बार–बार यह कहा जाता है कि, जिन लोगों की प्रतिभा न्यून है, उन्होंने मौलिक लेखन करने के स्थान पर बाल साहित्य या अनुवाद का आश्रय लेना चाहिए। किन्तु आदरणीय वेदकुमार जी ने इस धारणा को ग़लत साबित करते हुए अनुवादक होते हुए भी मौलिक रचनाकार की श्रेणी को अनायास ही प्राप्त किया है।

◆

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

जन्म : 27 जुलाई 1973

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. , सेट

लेखन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 90 से अधिक शोधलेख प्रकाशित

प्रकाशित ग्रंथ

1. दक्खिनी हिंदी साहित्यकार मुल्ला वजही
2. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और हिंदी
3. हिंदी में अनूदित भारतीय साहित्य
4. अनुवाद की भाषा एवं शब्दावली
5. पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद अंत: सम्बंध
6. भाषा-भाषांतर आणी शब्दावली
7. अधुनातन हिंदी कहानी साहित्य
8. अधुनातन हिंदी उपन्यास साहित्य
9. ऐ इमानवालों

शोध परियोजना : (UGC) की 3 लघु शोध परियोजना पूर्ण करने के उपरान्त इन दिनों (UGC) की बृहद् शोध परियोजना पर कार्य जारी है।

सम्प्रति : हिंदी विभागाध्यक्ष एवं असोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नलदुर्ग, जि. उस्मानाबाद महाराष्ट्र-413602

संपर्क : 09421951786, 09049695786

ई-मेल : drmirzahm@gmail.com

ब्लॉग : dakhiniparcham.blogspot.com

निवास : ताज अपार्टमेंट, 4 थी मंजिल, 284, शक्कर पेठ, सोलापुर-413005 (महा.)

साहित्य सागर

128/23 'आर' रवीन्द्र नगर

यशोदा नगर, कानपुर

₹1150.00

ISBN 978-93-82234-46-3